Printed Pages – 8

H-897

B. A. (Third Year) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper : Second

(हिन्दी नाटक, निबन्ध तथा स्फुट गद्य विधाएँ एवं जनपदीय भाषा बुन्देली)

Time Allowed : Three hours

Maximum Marks : 40

नोट : *सभी **तीनों** खण्डों के प्रश्न निर्देशानुसार करें। अंकों का विभाजन खण्डों के साथ दिया जा रहा है।*

खण्ड-'अ'

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न) **5×1=5**

नोट : *निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है।*

1. सही उत्तर चुनिए—

https://www.rdvvonline.com

(i) 'स्कन्दगुप्त' नाटक के नाटककार हैं—

(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(b) जयशंकर प्रसाद

(c) मोहन राकेश

(d) प्रताप नारायण मिश्र

(ii) 'कुटज' निबन्ध के निबन्धकार हैं—

(a) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(b) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

(d) कुबेरनाथ राय

(iii) हिन्दी का पहला नाटक है—

(a) पार्वती मंगल

(b) जानकी मंगल

(c) चौखे चौपदे

(d) प्रेम जोगिनी

(iv) 'धर्मवीर भारती' का जन्म हुआ—

(a) आगरा

https://www.rdvvonline.com

(b) इटावा

(c) इलाहाबाद

(d) भोजपुर

(v) 'आल्ह-खण्ड' में कौन सा रस है?

(a) करुण रस

(b) शृंगार रस

(c) वीर रस

(d) वीभत्स रस

खण्ड-'ब'

(लघु उत्तरीय प्रश्न) **5×2=10**

नोट : *निम्नलिखित सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।*

इकाई-I

2. 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' द्वारा रचित रचनाओं के नाम बतलाइये। **(कोई 4)**

https://www.rdvvonline.com

अथवा

'आषाढ़ के एक दिन' नाटक के आधार पर मल्लिका के चरित्र की कोई 2 विशेषता बतलाइये।

इकाई-II

3. कविता का अंतिम लक्ष्य क्या है? समझाइये।

अथवा

'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' के निबन्ध की विशेषता बतलाइये। (कोई 2)

इकाई-III

4. नाटक के प्रकार बतलाइये।

अथवा

रेखाचित्र की कोई दो विशेषता बतलाइये।

इकाई-IV

5. 'लक्ष्मी नारायण लाल' का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

अथवा

'महादेवी वर्मा' को आधुनिक युग की मीरा क्या कहा जाता है?

https://www.rdvvonline.com

इकाई-V

6. 'पं० भैयालाल ब्यास' संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

अथवा

'जगनिक' के 'आल्हाखण्ड' की विशेषता बताइये। (कोई दो)

खण्ड-'ब'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) **5×5=25**

नोट : *निम्नलिखित सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंकों का है।*

इकाई-I

7. नाटकीय तत्वों के आधार पर किसी **एक** नाटक की समीक्षा कीजिए—

(अ) 'भारत दुर्दशा'

(ब) स्कन्दगुप्त

(स) आषाढ़ का एक दिन

अथवा

'कविता क्या है?' निबन्ध का सारांश लिखिए।

https://www.rdvvonline.com

इकाई-II

8. 'आत्म कथा' से क्या आशय है? इसके उद्भव विकास को समझाइये।

अथवा

''ईसुरी बुन्देली के मानक कवि थे।'' इस कथन पर संक्षेप में अपने विचार प्रकट कीजिए।

इकाई-III

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिये—

''जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।''

अथवा

''बहरहाल यह कुटज-कुटज है, मनोहर कुसुमस्तवकों से झबराया उल्लास लोल चारुस्मित कुटज! जी भर आया। कालिदास ने 'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' रामगिरि पर यक्ष को जब मेघ की अभ्यर्चना के लिये नियोजित किया लोकम्बख्त को लाले कुटज पुष्पों की अंजलि देकर ही संतोष करना पड़ा—चंपक नहीं, वकुल नहीं, नीलोत्पल नहीं, मल्लिका नहीं, अरविन्द नहीं-फकत कुटज के फूल।''

https://www.rdvvonline.com

इकाई-IV

10. सप्रसंग व्याख्या कीजिये—

"उसका झरना ही अनन्त प्रक्रिया है, झरता पत्ता भी अगर एक ओर अपने अन्त का संकेत देता है तो दूसरी ओर क्या उस प्रेक्रिया का भी संकेत नहीं देता, जिसमें अन्त है ही नहीं केवल अर्थ-क्रियाओं की सनातना है? इसलिये झरता पत्ता तो मैने कई बार देखा है, लेकिन हर बार उसमें अटक गया हूँ और तब से चिरकाल के लिये उसमें अटक गया हूँ, जब से मैंने देखा कि डाल से झरता पत्ता नीचे न गिरकर अधर में ही एक दूसरी डाल से अटक गया जो दूसरी डाल अभी हरी थी।"

अथवा

अत: आज पूर्वाफाल्गुनी का अन्तिम पानपात्र मेरे होंठों से संलग्न है। क्रोध मेरी खुराक है, लोभ मेरा नयन-अंजन है और काम भुजंग मेरा क्रीड़ा सहचर है। इनको ही मैं क्रमश: विद्रोह प्रगति और नवलेखन कहकर पुकारता हूँ। भले ही यह विकार-जल हो, भले ही इसमें श्रेय प्रेम गति-मुक्ति कुछ भी न हो परन्तु इसमें जीर्णता और जर्जरता नहीं। यह जरा और वृद्धत्व का प्रतीक नहीं। पूर्वाफाल्गुनी द्वारा प्रदत्त विक्षिप्तता भी यौवन का ही एक अनुभव है।"

https://www.rdvvonline.com

इकाई-V

11. सप्रसंग व्याख्या कीजिये—

हमखाँ कोउ रजउ की सानी, दूजी नहीं दिखानी।
दस उर चार भुवन चौदा में, तीन लोक में छानी॥
बादसाय के बेगम नईयाँ, देउतन के देउतानी।
'ईसुर' देवलोक में नइयाँ, है जस वृषभान भुमानी॥

अथवा

"बजी दुलकिया तिक-तिक धिन्ना।
नीके बसन्ती आ गये दिना॥
सपनों की क्यारी में झूमे सुमन।
मुस्कावें अँखियन में नीलो गगन॥
अँगना में इठलाके फूले घना।
नीके बसन्ती आ गये दिना॥
धरती मगन है मौसम मगन।
गेहूँ की बालों में नाचे पवन॥
हरिया के बूँटन लागे चना।
नीके बसन्ती आ गये दिना॥

https://www.rdvvonline.com